International Journal of Humanities Social Science and Management (IJHSSM)
Volume 5, Issue 3, May-June, 2025, pp: 456-469 ISSN: 3048-6874
www.ijhssm.org

महाकवि कालिदास के काव्यों में प्रकृति चित्रण - एक विश्लेषण

डॉ. रविन्द्र कुमार गंगवार

Date of Submission: 15-05-2025 Date of Acceptance: 31-05-2025

महाकवि कालिदास को भारतीय काव्य-प्रतिभा के सर्वश्रेष्ठ कवि के रूप में माना जाता है। उनको जन्म देकर भारत भूमि की पावन धरा धन्य हुई है। सत्य तो यह है कि कालिदास केवल भारत के ही कवि नहीं है वल्कि उनकी कृतियों को कालातीत महिमा मिली है।उन्हें तो समूची पृथ्वी का कवि कहना ही उचित होगा। किसी भी देश मे जन्मे कवि, साहित्यकार एव सहृदयजनों को उनकी अमर रचनाएँ उसी प्रकार आनन्द-विह्वल और प्रेरित करती है जैसे किसी भारतीय को अपनी भारतीय संस्कृति पर गर्व है। प्रायः यह स्वीकार किया जाता है कि जिसमें जितनी अधिक सहृदयता एव सवदेनशीलता होगी वह उतना ही अधिक इम महाकवि की कृतियो का रसास्वादन कर सकेगा। कालिदास की कृतियों में जो रसमयता, जो आनन्दोत्पादकता एव जो अविनश्वर सुन्दरता छिपी हुई है वह युगान्त तक उसी प्रकार बनी रहेगी जिस प्रकार गगन-मण्डल के नक्षत्रो एव ग्रह-पुन्जों की भांति उनकी कान्ति कभी क्षीण होने वाली नही होती है। जिस प्रकार सहस्रों वर्ष बीत जाने पर भी आज उनका सम्मान और आदर है उसी प्रकार भविष्य में भी हजारो वर्षों तक वह सादर स्मरण किये जाते रहेगे ।कालिदास के कवि-कर्म की कौन सी विशेषता की चर्चा की जाय और किस विशेषता को छोडा जाययह निर्णय कर पाना अत्यन्त कठिन कार्य है। जिस प्रकार सस्कृत भाषा पर उनका अमामान्य अधिकार था उसी प्रकार कविता की विविध विधाओ के भी वह अद्‌वितीय सृप्टा थे। उनकी प्रतिभा सर्वतोमुखी थी। उनकी कल्पना का क्षेत्र पृथ्वी,आकाश तथा पाताल तक ही नहीं सीमित था वल्कि मानवमन की गहरी गुत्थियों को भी वह बखूवी समझते थे तथा वेद, व्याकरण, अलंकार, ज्योतिष, नीतिशास्त्र, वेदान्त, सांख्य, पदार्थ विज्ञान, इतिहास पुराण-आदि सभी विषयों मे उनका अधिकार असामान्य था। अपनी कृतियों मे उन्होने जहां जिसमें जितना चाहा है उतना अंश ले कर उसे चमत्कृत किया है। यद्‌यपि कविता के नवरसों के चित्रण में उन्हें काफी हद तक सफलता मिली है तथापि करुण और श्रृंगार रस के वर्णनों मे तो जैसे वह वाग्देवता के अवतार बन गए हैं।कविकुलगुरु कालिदास भारतीय संस्कृत साहित्य के एक उज्जवल देदीप्यमान नक्षत्र माने जाते हैं उनकी कृतियों की निखिल विश्व में प्रतिष्ठा है और संसार के सर्वश्रेष्ठ कवियों तथा नाटककारों में उनका प्रथम स्थान है।वस्तुत: वह कनिष्ठिकाधिष्ठित कवि के रूप में स्वीकार किए जाते हैं और उनकी समस्त कृतियों का नाम अनेक शताब्दियों से अनेक आदर और सम्मान के साथ किया जाता है।उन्होंने अपने महाकाव्यों,नाटकों तथा मेघदूत और ऋतुसंहार जैसे लघुकाव्यों में जो अनुपम सौन्दर्य का वर्णन किया है उसकी तुलना संस्कृत साहित्य में अन्यथा दुर्लभ है।लोकप्रियता की दृष्टि से भी संस्कृत साहित्य में कालिदास का अद्‌वितीय स्थान प्राप्त है उनकी रचनाएं विशिष्ट विद्‌वान तथा सामान्य व्यक्तियों को अर्थात्‌ दोनों को समान रूप से स्वीकार्य हैं। उनकी अनवद्‌य रचनाओं का आस्वादन जहां पण्डित मूर्धन्य करते हैं, वहीं संस्कृत का आरम्भ करने वाले छात्र भी सरल तरह से रचनाओं का आनन्द ले सकते हैं। इस प्रकार से संस्कृत साहित्य का वांग्मय कालिदास की रचनाओं से भरा हुआ है।सुप्रसिद्‌ध टीकाकर मल्लिनाथ ने कालिदास और उनकी रचनाओं के सम्बन्ध में लिखा है कि महर्षि कणाद का वेदान्त दर्शन पतञ्जलि का व्याकरण

International Journal of Humanities Social Science and Management (IJHSSM)
Volume 5, Issue 3, May-June, 2025, pp: 456-469 ISSN: 3048-6874
www.ijhssm.org

महाभाष्य,अक्षपाद गौतम का न्याय दर्शन,आदि शास्त्रों का जिसने सम्यक अध्ययन कर लिया है।1 वही कालिदास की अनवद्य रचनाओं का आनन्द ले सकता है। इसमें इससे भी बढ़कर एक बात कही है उससे भी प्रतीत होता है कि कालिदास की सूक्तियों का मर्मभेदन करना बड़े-बड़े पण्डितों का काम है। संस्कृत काव्य के टीकाकारों में मल्लिनाथ का सर्वश्रेष्ठ स्थान है। संस्कृत के अनेक उत्कृष्ट एवं जटिल महाकाव्यों पर यदि उनकी टीकाएं सुलभ न होती तो भी वह इतने लोकप्रिय न होते।कालिदास की रचनाओं को लेकर मल्लिनाथ ने लिखा है कि कालिदास की रचना के तत्वों को केवल आज के तीन ही व्यक्ति जान सकते हैं उनमें एक विधाता ब्रह्मा दूसरी वाग्देवी सरस्वती तथा तीसरे स्थान पर स्वयं कालिदास ही जान सकते हैं। इसके अतिरिक्त अन्य कोई भी कालिदास के कवि-कर्म के मर्म समझने में सक्षम नहीं हो सकता है।2महाकवि कालिदास की रचनाएं संस्कृत साहित्य की सर्वश्रेष्ठ निधि हैं।उनके कारण ही समस्त संसार में उस समय भी आदर हुआ और जब हमारा देश परतन्त्र था। कालिदास और उनकी रचनाओं के बिना विशाल संस्कृत में की महिमा अत्यन्त अल्प हो जाएगी। पाश्चात्य विद्वानों ने मुक्त कण्ठ से कालिदास की प्रशंसा की है। जर्मनी के प्रसिद्ध सुप्रसिद्ध विद्वान कवि गेटे ने कालिदास और उनकी कृति अभिज्ञान शाकुन्तलम के सम्बन्ध में अपने एक पद्य के माध्यम से इतना कुछ कह दिया है कि उससे यह ज्ञात हो जाता है कि संसार की सुप्रसिद्ध महाकवियों में कालिदास की स्थिति क्या हो सकती है।जर्मन विद्वान गेटे नृत्य.

☆ एसो.प्रो. संस्कृत, गन्ना उत्पादक स्नातकोत्तर महाविद्यालय बहेड़ी, बरेली

करते हुए कह रहे हैं कि हे मित्र! यह तुम बसन्ती युवावस्था के मनोरम पुष्प और ग्रीष्म तुल्य प्रौढ़ावस्था के उत्तम फल और अन्य ऐसी आत्मा को प्रभावित करने वाली श्रेष्ठ सामग्रियां एक ही स्थान पर ढूंढना चाहते हो तो कालिदास की शकुन्तला पढ़ो। उसमें पहुंचकर न केवल तुम्हारी आत्मा ही सन्तुष्ट और शान्त होगी अपितु तुम्हें स्वर्ग और मृत्यु लोक की सकल समृद्धियां भी वहां एक जगह पर ही मिल जाएगी।3 महाकवि कालिदास को शताब्दियों में पूर्व से ही कविकुलगुरु की उपाधि प्राप्त हो गई थी और आज भी वह उक्त पदवी के अधिकारी हैं। उनकी उपलब्ध कृतियों को संस्कृतज्ञ समाज में शताब्दियों पूर्व के समान ही आज भी परमादर की दृष्टि से देखा जाता है। इसका कारण यह है कि वह मानव जीवन की शाश्वत आकांक्षाओं एवं प्रवृत्तियों के सूक्ष्मदृष्टा कवि हैं।उनकी अमर कविता की स्रोतस्विनी ऐसे अगाध प्रेम की लहलहाती पृष्ठभूमि पर प्रवाहमान है जो कभी शुष्क हो ही नहीं सकती है। उन्होंने इस नश्वर जगत में ऐसी मानवीय समस्याओं को अपना वर्ण्य विषय बनाया है जो काल एवं देश की सीमा में कभी बंध नहीं सकते है। उनकी दृष्टि सदैव असीम सौन्दर्य का दर्शन करती थी वह उस पावन प्रेम के पुजारी थे जो कलुषित वासनाओं से प्रेरित होकर नहीं सर्वस्व समर्पण की उद्दाम लालसाओं की ओर सदैव लालायित रहता है।

कालिदास की सूक्ष्म दृष्टि केवल वाह्य सौंदर्य की उपासिका नहीं थी ।उन्होंने बहते पानी में अपनी सौंदर्यप्रियता का जो मानदण्ड स्थिर किया है उसे देखकर यह कहा जा सकता है कि वह क्या भीतर,क्या बाहर, क्या सुख, क्या दुख,क्या सम्पत्ति,क्या विपत्ति इत्यादि सभी समस्याओं में अक्षुण्ण रहने वाले अगाध सौन्दर्य के प्रेमी थे। अखिल विश्व ब्रह्माण्ड में फैली हुई प्रकृति सुन्दरी की स्वर्गीय सुषमा को भी मानव सौन्दर्य में प्रतिमूर्ति देखते थे।उनकी मान्यता थी कि जो सुन्दर और दर्शनीय होता है उसका हृदय कभी कुटिल क्रूर हो ही नहीं सकता और जो वास्तव में ही सुन्दर होता है उसे आभूषण या मण्डन की आवश्यकता नहीं पड़ती है।4 यह केवल नारी के अंगों में ही सौन्दर्य के दृष्टा नहीं थे वल्कि संसार में सर्वत्र व्याप्त सौन्दर्य को देखकर ही तृप्त होते थे। मानव

International Journal of Humanities Social Science and Management (IJHSSM)
Volume 5, Issue 3, May-June, 2025, pp: 456-469 ISSN: 3048-6874
www.ijhssm.org

शरीर अथवा नारी के अंगों का सौन्दर्य ही उनका प्रिय वर्ण्य विषय नहीं था वन,उद्यान,पर्वत,नदी,सरोवर,गुहा तथा वन्य जीव-जन्तु आदि की सुन्दरता को भी उन्होंने वही महत्व दिया है।नारी को वह केवल उपभोग की वस्तु नहीं मानते थे उनका मत था कि वह गृहिणी है, सचिव है, सखी है और समस्त ललित कलाओं में निष्णात गृहस्वामिनी है।नारी के अंगों का सौन्दर्य ही उसके लिए गौरव और सौन्दर्य की वस्तु नहीं है, अपितु उसका हृदय एवं शील सदाचरण भी उसी के योग्य होना चाहिए। कालिदास के प्रेम की परिणति केवल उद्दाम काम लालसा की क्षणिक तृप्ति मात्र नहीं थी, उनके पात्रों में अपने प्रेम की रक्षा के लिए समस्त जीवन का उत्सर्ग कर देने की निष्ठा थी। कालिदास सौन्दर्य को प्रेम में तथा प्रेम को जीवन समर्पण में सफल मानते थे। उनके सौन्दर्य और प्रेम का आदर्श बहुत उच्च कोटि का था। उन्होंने अपने पात्रों में प्रेम और सौन्दर्य के जो उत्कृष्ट कल्पना की है वह प्राचीन भारतीय विचारधारा के सर्वथा अनुरूप है। परस्त्री के प्रति कामुक भावना तो दूर दृष्टिपात करना भी कालिदास पाप समझते थे। यद्यपि वह स्वीकार करते थे की प्रेम का ज्वार अपवादों की परवाह नहीं करता है। फिर भी उनका मानना था कि पुरुषों को अपना चित्त पराई स्त्री के रूप या आकर्षण से विमुख रखना चाहिए। कालिदास ने प्रेम की सार्थकता को विवाह में तथा विवाह की सार्थकता को सन्तानोपत्ति के मांगलिक व्यापार में स्वीकार किया है।उनके पात्रों में जहां कहीं प्रेम व्यापार हुआ है वहां सर्वत्र इस प्राचीन भारतीय मर्यादा की यथेष्ट रक्षा हुई है। यही कारण है कि इस भारतीय कवि को और उनकी कृतियों को देश और काल की संक्षिप्त सीमा में बांधा नहीं जा सका और सहस्रों वर्षों से आज तक उसे सार्वभौम प्रतिष्ठा प्राप्त हो रही है। कालिदास का प्रकृति प्रेम विश्व विश्रुत है। केवल संस्कृत साहित्य में ही नहीं विश्व साहित्य में उनसे बढ़कर प्रकृति का पुजारी कोई दूसरा कवि दिखाई नहीं देता है।सामान्य कवियों की भांति वह प्रकृति को केवल उद्दीपन विभाव के रूप में नहीं मानते थे, वल्कि वह प्रकृति का को प्रेम का पूरक मानते थे। उनकी दृष्टि में मानवीय सौन्दर्य का मापदण्ड प्राकृतिक सौन्दर्य ही था। उनकी रचनाओं में पार्वती,इन्दुमती, शकुन्तला मालविका, उर्वशी आदि नायिकाओं के अंग-प्रत्यंग ओं की शोभा प्राकृतिक उपादानों से बिल्कुल मिलती-जुलती है। कालिदास प्रकृति को मूक, अचेतन और निष्प्राण नहीं मानते थे। उनके मानव पात्रों की भांति उनके प्राकृतिक पात्र भी सुख-दुख, आनन्द-उल्लास संवेदना आदि मनोविकारों का अनुभव करते थे। उनके वृक्ष और लताएं रोती थी, आंसू बहाती थीं, भेंट और उपहार समर्पित करती थीं तथा कुशल क्षेम भी पूछतीं थी। उनका मत है कि मनुष्य जब प्रकृति के जीवन से पृथक हो जाता है तो यह समझ लेना चाहिए कि उसकी अंतश्चेतना मर गई है।उसकी आध्यात्मिक भूख मर गई है और उसमें समाज के कल्याण की भावना सूख रही है।यों तो कालिदास की समस्त रचनाओं में प्रकृति के जीवन से मानव जीवन को प्रेरणा और उद्बोधन प्राप्त होने का सन्देश मिलता है। किन्तु उनका अभिज्ञान शाकुन्तलम तो जैसे प्रकृति के साथ मानवीय सम्बन्धों की एक मुखर चित्रशाला है। प्रकृति के साथ मनुष्य के मधुर सम्बन्धों की जो मनोहर छटा अभिज्ञान शाकुन्तलम दिखाई पड़ती है उसकी तुलना अन्यत्र दुर्लभ है। महाकवि कालिदास की अद्वितीय सफलता और लोकप्रियता का एक कारण यह भी है कि वह अपनी सरस और अक्लिष्ट भाषा से सभी को मोहित कर लेते थे।वह सुरभारती के लाडले बेटे के रूप में माने जाते थे।उनकी कल्पनाएं जितनी सुकुमार उदात्त तथा मनमोहिनी थी उतनी ही उनकी कवित्व प्रतिभा शक्तिशाली थी। वह जटिल थे जटिल श्लोक बना सकते थे और उसमें क्लिष्ट से क्लिष्ट भाषा तथा अलंकारों का भी प्रयोग कर सकते थे। किन्तु ऐसा होने पर भी उन्होंने कहीं नाममात्र के लिए पाण्डित्य प्रदर्शन नहीं कियाएक प्राकृत चित्रहार की भांति अपनी सहज उद्भावनाओं को उन्होंने बिना किसी प्रयास और आडम्बर के रख दिया है।बड़ी से

International Journal of Humanities Social Science and Management (IJHSSM)
Volume 5, Issue 3, May-June, 2025, pp: 456-469 ISSN: 3048-6874
www.ijhssm.org

बड़ी बातों को सरल और सीधे शब्दों में बांधने का भरसक प्रयास किया है।उन्होंने अलंकारों के पीछे न पड़ करके कविता कामिनी की कलेवर को कष्ट पहुंचाया है और न अधिक जटिल छन्दों के बन्धों के मोह माया में ग्रस्त होकर पण्डितों को भी सिर खपाने की विपत्ति मसे बचाने का प्रयास किया है।उन्होंने निसर्ग कन्या शकुन्तला की तरह अपनी कविता कामिनी को भी दर्शन मात्र से पण्डित समाज के हृदय को अपनी ओर आकर्षित करने की अद्भुत प्रयास किया है। उनकी कृतियों में संस्कृत काव्य शैली अथवा नाट्य शैली का सर्वोत्कृष्ट रूप दिखाई पड़ता है। कवियों की श्रेणी में जहां सर्वश्रेष्ठ कवि हैं वहां उनकी तुलना का कोई अन्य नाटककार भी आज देश की धरती पर आज तक पैदा नहीं हुआ है।जैसे मां भारती ने अपने ईश्वर लाडले बेटे को बिना किसी विकल्प के ही अपनी सारी निधियां सोप दीं थी। कालिदास की अपनी मौलिकता भी उनकी लोकप्रियता का कारण बनी है। यद्यपि उन्होंने अपने वर्ण्य विषय को प्राचीन ग्रन्थों से लिया तथापि उनकी मौलिक उद्भावनाएं वहां भी उल्लिखित हैं। अनेक नीरस और उपेक्षित इतिवृत्तों को प्राचीन सन्दर्भों से लेकर उन्होंने अपनी कल्पना के रंग में इस प्रकार से रंगा है की मूल ग्रन्थ के विषय फीके पड़ गए हैं और कालिदास के पात्र तथा उनकी कल्पनाप्रसूत घटनाएं आगे आ गयी है।उनकी रचना चातुरी से उन्होंने इस उन प्राचीन विषयों का ऐसा स्वरूप परिवर्तन कर दिया है कि वह प्रकृति चित्रण में एक मौलिकता के रूप में दृष्टिगोचर होते हैं।

उनकी लोकप्रसिद्धि का कारण उनके सर्वकालिक काव्य का आधार माना जाता है,जो कि उनका प्रकृति प्रेम है।महाकवि कालिदास ने प्रकृति का केवल उल्लेख करने के साथ-साथ ही प्रकृति चित्रण ही नहीं किया है अपितु प्रकृति को मानव जीवन का अभिन्न अंग मानते हुए अपने काव्य में उसका मानवीकरण किया है।उनके काव्य का अनुशीलन करने से यह ज्ञात होता है कि उनका काव्य पारिस्थितिकी चिन्तन का आधार है क्योंकि ऋतुसंहार खण्डकाव्य में तो पारिस्थितिकी विषय का साहित्यिक रूप स्पष्ट रूप से दृष्टि होता है।ऋतुसंहार में यह प्रकृति के सौन्दर्य और जल के महत्व को दर्शाते हुए कहते हैं कि किस प्रकार से गर्मी और प्यास जानवरों को भ्रमित कर सकती है और उन्हें गलत दिशा में ले जा सकती है।5 महाकवि कालिदास ने मानव जीवन पर एवं अन्य जीवन पर ऋतुओं के प्रभाव का सूक्ष्मातिसूक्ष्म विश्लेषण किया है। मेघदूत खण्डकाव्य में तो प्रकृति को मानवीकरण रूप में प्रस्तुत करते हुए उन्होंने यक्ष के साथ मेघ को एक व्यक्ति के रूप में वार्तालाप करते हुए वर्णित किया है। अभिज्ञान शाकुन्तलम में तो प्रकृति प्रेम चरमोत्कर्ष पर वर्णित किया गया है। महाकाविने प्रकृति को अपने सुख-दुख का साथी बनाते हुए लिखा है कि प्रकृति उसकी ऐसी मित्र है जो उसके सुख में सुखी दुख में दुखी होती है। प्रकृति मानव जीवन में अनुस्यूत है या ऐसा भी कह सकते हैं कि मानव प्रकृति के अभाव में अधूरा है। कुमारसम्भव, रघुवंश आदि के पात्र स्वयं अनुभूत सुख-दुख का रूप प्रकृति के दर्पण में देखते हैं। कालिदास की रचनाओं में प्रकृति मानव से पूर्ण तरह जुड़ी हुई है। वह उसके सुख में सुखी तथा दुख में दुखी दिखायी देती है। महाकवि ने अभिज्ञान शाकुन्तलम में सूर्य, चन्द्रमा, आकाश, जल, अग्नि, पृथ्वी, वायु अर्थात् पर्यावरण का निर्माण करने वाले सभी कारकों से कल्याण की कामना की है।मानव एवं जीव-जगत के निर्मिति और विकास के लिए प्रकृति और पारिस्थितिकी सभी उपादानों की अपरिहार्यता मानी है।इन्हीं के मध्य मनुष्य और अन्य जीव-जगत अपनी स्थिति धारण करते हैं। अतः कवि ने इन सब में कल्याण अर्थात् शिवत्व का ध्यान करके इन सबसे रक्षा की प्रार्थना की है। अभिज्ञान शाकुन्तलम के मंगलाचरण में वह भगवान शिव से कल्याण की कामना व्यक्त करते हुए कहते हैं कि जो सृष्टिकर्ता विधाता की प्रथम सृष्टिरूपा उनका जलमयी मूर्ति है, जो अग्निरूपा मूर्ति विधिपूर्वक हुत हवनीय पदार्थों को धारण करती है, आहुति देने वाले यजमानरूपा मूर्ति है, जो दो

International Journal of Humanities Social Science and Management (IJHSSM)
Volume 5, Issue 3, May-June, 2025, pp: 456-469 ISSN: 3048-6874
www.ijhssm.org

समय का विधान करने वाली सूर्यरूपा एवं चन्द्ररूपा मूर्ति है,आकाशरूपा मूर्ति श्रवणेन्द्रिय से ग्रहण किए जाने योग्य शब्द गुणवाली समस्त विश्व को व्याप्त करके स्थित है, जिस पृथ्वीरूपा मूर्ति को समस्त अन्नादि के बीजों का कारण कहते हैं,जिस वायु स्वरूपा मूर्ति के द्वारा जीवन धारण कर सामर्थ्यवान बनते हैं, उन प्रत्यक्ष दिखायी देने वाली आठ मूर्तियों से समन्वित सर्वशक्तिमान भगवान शिव आप सब की रक्षा करें।6 पारिस्थितिकीय सन्तुलन में महत्वपूर्ण कारक वर्षा चक्र पर भी उल्लेख करते हुए लिखते हैं कि राजा दिलीप निवेदन करते हुए कहते हैं कि ही यज्ञकर्ता आपकी आहुतियां अनावृष्टि से सूखे हुए धान पर जल वृष्टि होकर बरसती है।7 मानव का प्रकृति के साथ सन्तुलन बनाए रखने पर भी अभिज्ञान शाकुन्तलम में महाकवि कालिदास वर्णित करते हुए कह रहे हैं कि इन्द्र तुम्हारी प्रजा के लिए सदा समृद्धि देने वाली बरसात करते रहे।तुम भी सैकड़ों युगों तक राज्य करते हुए यज्ञ के द्वारा इन्द्र को प्रसन्न करो। इस प्रकार एक दूसरे के लिए प्रशंसनीय कार्य करते हुए दोनों लोक भूलोक और परलोक में सुखी रहें।इस श्लोक के माध्यम से कवि ने पारस्परिक उपकार की भावना से यज्ञ द्वारा वृष्टि का उपाय बताते हुए प्रकृति और मनुष्य का अन्योन्याश्रित सिद्ध किया है। पारिस्थितिकी विचारधारा का एक महत्वपूर्ण घटक जलवायु को माना गया है, जिस प्रकार जलवायु हिमालय द्वारा नियमित होती है यह सर्वविदित है कि हिमालय शीत लहरों को रोकता है।उसकी औषधीयां और वनस्पतियां मानव के लिए प्रकृति का बहुमूल्य उपहार है।कवि ने यज्ञ भाग में हिमालय को अधिकारी बनाया है। इसके पीछे यह तथ्य भी हो सकता है कि हिमालय मानवीय आवश्यकताओं की सम्पूर्ति करता है। यदि हिमालय को अत्यधिक दोहन के द्वारा विकृत किया गया तो पूरी सृष्टि संकट में पड़ सकती है।8 साथ ही महाकवि कालिदास ने लता,पेड़,पशु-पक्षी आदि पर मनुष्य को आरोपित कर मनुष्य और जैव-जगत में परस्पर सामञ्जस्य बैठाने का प्रसंसनीय कार्य किया है। मेघदूत में यक्ष की पत्नी मंदार के पेड़ को पुत्र के समान मानती है।अभिज्ञान शाकुन्तलम में भी शकुन्तला अपने आश्रम के वृक्षों के साथ सगे सम्बन्धियों जैसा सम्बन्ध मानकर परिवार जैसा व्यवहार करती है।पारिस्थितिकी का महाकावि ने शुष्क वर्णन नहीं किया अपितु पारिस्थितिक को जीवन का हिस्सा बना दिया है।शकुन्तला पादपो का सिन्चन किए हुए बिना स्वयं भी पानी नहीं पीती थी। वह आभूषण पहनना पसन्द करती थी परन्तु आभूषण के लिए कभी एक पत्ता भी नहीं तोडती थी। पौधों में फूल आने पर वह उत्सव मनाती थी। प्रकृति के प्रति ऐसी मानवीय संवेदना से पारिस्थितिकी सन्तुलन कभी नहीं बिगड़ सकता है। अभिज्ञान शाकुन्तलम में प्रकृति के प्रति अपनत्व का वर्णन करते हुए कहते हैं कि जो शकुन्तला पहले तब तक जल पीने का प्रयास नहीं करती जब तक पहले तुम्हें पिला नहीं देती, सजने सवरने के प्रति प्रेम होने पर भी स्नेह के कारण कभी आपके कोमल पत्तों को नहीं तोड़ती, तुम सब के प्रथम पुष्प उत्सव के अवसर पर जिसका हर्षोल्लास होता है, वही शकुन्तला आज अपने पति के घर जा रही है,आप सभी उसको जाने की अनुमति प्रदान करें।9 महाकवि ने यथा अवसर पशु-पक्षी जगत के साथ ही मानव के उदार सम्बन्ध को अभिव्यक्त किया है।दीर्घापांग नामक हिरण शावक शकुन्तला को प्रेम से पति के घर जाने से रोकता है क्योंकि उस हिरण की मां की मृत्यु के पश्चात शकुन्तला ने ही इसे पहले पाला है। थोड़ा बड़ा होने पर उसने कुशों को कुतरने का प्रयास किया उसके मुंह में घाव हो गया।तब शकुन्तला ने इंगुदी का तेल लगाकर इसका उपचार किया है। वही मृगशावक शकुन्तला को आंचल पड़कर इस प्रकार रोकने का प्रयास करता है जैसे कोई छोटा बच्चा अपनी मां के पास रहना ही पसन्द करता है। कविकुलगुरु कालिदास जी कह रहे हैं कि कुशों के अग्र भाग से घायल जिसके मुख में तुमने घाव को भरने के लिए इंगुदी के तेल को लगाया था, श्यामक नामक धान

International Journal of Humanities Social Science and Management (IJHSSM)
Volume 5, Issue 3, May-June, 2025, pp: 456-469 ISSN: 3048-6874
www.ijhssm.org

की मुट्ठियों से पाला था इसको तुमने पुत्र रूप में माना था वही हिरण तुम्हारे मार्ग को आज नहीं छोड़ रहा है।10 चौथे अंक के चरम सौन्दर्य में दो भारतीय भावात्मक परिकल्पनाओं का सांमजस्य हुआ है, एक भारतीय परिवार में कन्या की स्थिति में उद्भूत और दूसरी मानव और प्रकृति के आन्तरिक गम्भीर सम्बन्ध पर आधारित है। शकुन्तला की विदाई के अवसर पर मानवीय भावनाओं की कोमलतम अभिव्यक्ति, प्रकृति की साहचर्य भावना की सुकुमारता से तादात्म्य स्थापित कर काव्यात्मक सौन्दर्य का अपूर्व दृश्य उपस्थित करते हुए महाकवि कालिदास जी कहते हैं कि किसी वृक्ष के द्वारा शकुन्तला को चन्द्रमा के समान शुभ्र (धवल) माङ्गलिक रेशमी वस्त्र प्रकट कर दिया गया । किसी (वृक्ष) के द्वारा पैरो को रँगने योग्य लाक्षारस (महावर) चुवाया (दिया) गया । अन्य (वृक्षो) के द्वारा कलाई (पर्वभाग) तक उठे हये ओर निकलते हये नवपल्लवों के समान वनदेवता के करतलों (हथेलियों) से आभूषण दिये गये।11

प्रिये! ग्रीष्म ऋतु आ गयी है। सूर्य की किरणें प्रचण्ड हो गयी हैं। चन्द्रमा सुहावना लगने लगा है। निरन्तर स्नान के कारण कुँओं-तालाबों का जल प्राय: समाप्त हो चला है।सायंकाल मनोरम लगने लगा है तथा काम का वेग स्वयं शान् भी ओर शत हो गया है। इसी प्रकार कवि का वर्षा तथा अन्य ऋतुओं का वर्णन भी सजीवता एवं कमनीयता से परिपूर्ण है।मेघदूत में तो कवि ने प्रकृति एवं मानव में तादात्म्य स्थापित कर दिया है।पूर्वमेघ में प्रधानतया प्रकृति के बाह्य रूप का चित्रण है, किन्तु उसमें मानवीय भावनाओं का संस्पर्श है, मेघदूत तो वर्षा ऋतु की ही उपज है। वहाँ वर्षा से प्रभावित होने वाले समस्त जड़-चेतन पदार्थों का निरूपण है। मेघ जिस-जिस मार्ग से होकर आगे निकल जाता है उस-उस मार्ग में अपनी छाप छोड़ जाता है।12 जल बरसने के कारण पुष्पित कदम्ब को भ्रमर मस्त होकर देख रहे होंगे, प्रथम जल पाकर मुकुलित कन्दली को हरिण खा रहे होंगे और गज प्रथम वर्षाजल के कारण पृथिवी से निकलने वाली गन्ध सूँघ रहे होंगे-इस प्रकार भिन्न-भिन्न क्रियाओं को देखकर मेघ के गमन मार्ग का स्वत: अनुमान हो जाता है। प्रकृति से मनुष्य का घनिष्ठ सम्बन्ध है। यही कारण है कि वह मनुष्य के अन्त:करण को प्रभावित करती है। मेघदूत में कवि ने इसी तथ्य को उजागर करते हुए कहते हैं कि मेघ को देख लेने पर तो सुखी अर्थात् संयोगी जनों का चित्त कुछ का कुछ हो जाता है फिर वियोगी लोगों का क्या कहना। कालिदास ने प्रकृति को मनुष्य के सुख-दु:ख में सहभागिनी निरूपति किया है। विरही राम को लताएँ अपने पत्ते झुका-झुका कर सीता के अपहरण का मार्ग बताती हैं, मृगियाँ दर्भाकुर चरना छोड़कर बड़ी-बड़ी आँखें दक्षिण दिशा की ओर लगाये टुकुर-टुकुर ताकती रह जाती हैं।13 कालिदास प्रकृति को चेतना एवं भावनायुक्त पाते हैं। पशु-पक्षी आदि तो चेतनवत व्यवहार करते ही है, सम्पूर्ण चराचर प्रकृति भी मानव की भाँति व्यवहार करती दिखायी देती हैं। महाकवि ने मेघ को दूत बनाकर धूम, अग्नि, जल, पवन के सम्मिश्रण रूप जड़ पदार्थ को मानव बना दिया है। वे प्रकृति में न केवल मानव की बाह्या आकृति का आरोप करते हैं अपितु उसमें सुख:दु:खादि भावों की भी सम्भावना करते हैं। वे प्रकृति को प्राय: प्रेमी अथवा प्रेमिका के रूप में देखते हैं।मेघदूत में उज्जयिनी की ओर जाते हुए मेघ को मार्ग में पड़ने वाली निर्विन्ध्या नदी विभिन्न हाव-भाव से आकृष्ट करते हुए वर्णित किया है कि हे मेघ! तरंगों के हलचल के कारण शब्दायमान पक्षियों की पंक्ति रूपी करधनी को धारण करने वाली, स्खलित प्रवाह के कारण सुन्दरतापूर्वक बहने वाली अर्थात् मस्त होकर चलने वाली और भँवर रूप नाभि को दिखाने वाली निर्विन्ध्या नदी रूपी नायिका से मिलकर तुम रस अवश्य प्राप्त करना, क्योंकि कामिनियों का हाव-भाव प्रदर्शन ही रतिप्रार्थना वचन होता है।14महाकवि कालिदास ने प्रकृति के श्रेष्ठ तत्त्वों को ग्रहण कर उनकी अप्रस्तुत रूप में योजना की है। वे पात्रों को उपस्थित करने के लिए प्रकृति

International Journal of Humanities Social Science and Management (IJHSSM)
Volume 5, Issue 3, May-June, 2025, pp: 456-469 ISSN: 3048-6874
www.ijhssm.org

के सुन्दर तत्त्वों से सादृश्य स्थापित करते हैं। रघुवंश में राजा रघु के मुख-सौन्दर्य के वर्णन के लिए वे प्रकृति के सुन्दरतम एवं प्रसिद्ध उपमान चन्द्र का आश्रय लेते हुए वर्णन करते हैं।15 शरद ऋतु में रघु के खिले हुए मुख और उज्ज्वल चन्द्रमा को देखकर दर्शकों को एक-सा आनन्द मिलता था। कवियों ने नारी के शरीर की तुलना प्राय: लता से की है, किंतु कुमारसम्भव में कालिदास पार्वती को चलती-फिरती एवं फूलों से लदी लता के रूप में वर्णित किया है।16प्रकृति को उपदेशिका रूप में महाकवि कालिदास प्रकृति को उपदेशिका रूप में वर्णित करते हुए कहते हैं कि प्रकृति से प्राप्त होने वाले सत्य का स्थान-स्थान पर उल्लेख करते हैं जो मानव जीवन का मार्ग-निर्देश करती है एवं आदर्श उपस्थापित करती है। मेघ बिना कुछ कहे चातकों को वर्षा जल प्रदान कर उनका उपकार करता है पपीहे के जल माँगने पर मेघ बिना उत्तर दिये उन्हें सीधे जल दे देता है। सज्जनों का यह स्वभाव होता है कि जब उनसे कुछ माँगा जाय तो वे मुँह से कुछ कहे बिना, काम पूरा करके ही उत्तर दे देते हैं।17

रघुवंश में कालिदास को जल के स्वभाव से शिक्षा मिलती है। जल तो प्रकृत्या शीतल है, उष्ण वस्तु के सम्पर्क से भले ही कुछ क्षण के लिए जल में उष्णता उत्पन्न हो जाए। इसी प्रकार महात्मा भी प्रकृति से क्षमाशील होते हैं, अपराध करने पर वे कुछ क्षण के लिए ही उद्विग्न होते हैं।18प्रकृति के सहज सौन्दर्य, मानवीय राग, कोमल भावनाओं तथा कल्पना के नवनवोन्मेष का जो रूप कुमारसम्भव के अष्टम सर्ग में मिलता है, वह भारतीय साहित्य का शिखर कहा जा सकता है। कवि ने सन्ध्या और रात्रि का वर्णन हिमालय के पावन प्रदेश में शिख के गरिमामय वचनों के द्वारा पार्वती को सम्बोधित करते हुए कराया है, और प्रसंग, पात्र, देशकाल के अनुरूप प्रकृति का इतना उदात्त और कमनीय वर्णन विश्व साहित्य में दुर्लभ कहा जा सकता है। पश्चिम में डूबते सूर्य की रश्मियां सरोवर के जल में लम्बी-लम्बी होकर प्रतिबिम्बित हो रही है, तो लगता है कि अपनी सुदीर्घ परछाइयों के द्वारा विवस्वान भगवान ने जल में सोने के सेतुबन्ध रच डाले हो।19कालिदास की कल्पना खेतों और खलिहानों में रमती है, प्रकृति के सहज सौन्दर्य का मानव-सौन्दर्य से और कृत्रिम साज-सज्जा से उत्कृष्ट पाती है। कुमारसम्भव में चन्द्रमा की किरणों के लिये जौ के ताजा अंकुर का उपमान देकर उन्होंने मानों स्वर्ग को धरती से मिला दिया है। 19कहीं पर शिव को वृक्षों की टहनियों से बिछल (फिसल) कर छन-छन कर धरती पर गिरती चाँदनी के थक्के वृक्षों से टपक पड़े फूलों से लगते हैं, जिन्हें उठा-उठा कर पार्वती के केशों में सजाने का उनका मन होने लगता है।20प्रकृति में मानवीय राग, करुणा और हृदय की कोमलता के दर्शन कालिदास अपनी विश्वदृष्टि के द्वारा ही कर सके हैं। अंधेरा रात्रि रमणी का जुड़ा है, जिसे चन्द्रमा अपने करों से बिखेर देता है, और फिर उस रमणी के सरोज लोचन वाले मुख को उठा कर वह चूम लेता है। यहां पर महाकवि ने उत्प्रेक्षा और स्वभावोक्ति उत्कृष्ट संसृष्टि कवि ने इस प्रकार के प्रकृति-चित्रणों में की है। उक्त पद्य में 'कुडमलीकृतसरोजलोचनं' कामिनी का लज्जा से नेत्र मूंदने का चित्र होने से वल्लभदेव के अनुसार स्वभावोक्ति है, जबकि 'चुम्बतीव' में समासोक्ति तथा उत्प्रेक्षा दोनों अलंकार आ गये हैं।21 महाकवि कालिदास ने यद्यपि प्राय: प्रकृति के कोमल रूप का चित्रण किया है, किन्तु कुमारसम्भव के वर्षा चित्रण में भयावहता वर्णित करते हुए कहते हैं कि कार्तिकेय के वारुणास्त्र चलाते ही भयंकर अंधेरा करती हुई प्रलय की आग से उठे हुए धुँए के समान ऐसी काली-काली घटायें आकाश में छा गयीं जिनके गर्जन से पहाड़ की चोटियों तक दरारें पड़ गयीं।22

रघुवंशम् में प्राकृतिक दृश्यों के स्वाभाविक एवं मनोहारी चित्रण भरे पड़े हैं। प्रथम सर्ग में वशिष्ठ आश्रम का स्वाभाविक चित्रण है। ऋषियों की पर्णशालाओं के द्वार को मृग रोक कर बैठे हुए हैं। जिससे ज्ञात होता है कि मानों वे ऋषि पत्नियों की सन्तान हों। संध्या काल में सूर्यास्त का मनोहारी

International Journal of Humanities Social Science and Management (IJHSSM)
Volume 5, Issue 3, May-June, 2025, pp: 456-469 ISSN: 3048-6874
www.ijhssm.org

चित्रण सभी का ध्यान आकर्षित करता है।कुमारसम्भव का तो प्रारम्भ ही प्रकृति की रमणीयता से हुआ है। मंगलाचरण के रूप में महाकवि कालिदास ने हिमालय का ही गुणगान किया है। कालिदास की व्यापक दृष्टि इस विस्तृत राष्ट्र के आसेतु हिमालय की मनोहारिणी प्रकृति पर पड़ी थी। जिसे उन्होंने कहीं आलम्बन रूप में तो कहीं उद्दीपनात्मक रूप में वर्णन अवश्य किया है। कुमारसम्भव में विभिन्न पर्वतों, वनों, ऋतुओं तथा सरोवरों आदि का मनोहारी पक्ष पाठक के चित्त को आकर्षित करता है। हिमालय का विस्तृत व सूक्ष्म वर्णन कवि के काव्य कौशल की यश-पताका को विश्व में प्रकाशित करता है। हिमालय को देवता स्वरूप मानते हुए उसे पृथ्वी के मेरूदंड के समान स्थित बताया है। संध्या के समय चन्द्ररूपी नायक अपनी किरणरूपी सुकुमार अंगुलियों से रात्रि के अंधकाररूपी बिखरे केशपाश को समेटकर अपनी प्रियतमा रजनी के अर्द्धमुद्रित कमलरूपी नेत्र वाले मुखमण्डल का चुंबन कर रहा है।24

मेघदूत में महाकवि कालिदास ने बाह्य प्रकृति तथा अन्तः प्रकृति दोनों का ही सूक्ष्म एवं मार्मिक चित्रण किया है। बाह्य प्रकृति के प्रति कवि का अनन्य अनुराग रहा है। प्राकृतिक दृश्य का वर्णन इस प्रकार से किया है कि जनमानस के सामने उनका स्पष्ट चित्र उपस्थित हो जाता है।पूर्व मेघ में बाह्य प्रकृति का ही मनोहर योजनात्मक वर्णन है।वर्षा ऋतु और उसमें होने वाली प्राणियों की विविध उत्कण्ठाओं का जैसा चित्रण मेघदूत में है, वैसा अन्यत्र दुर्लभ है।मेघ के आगमन से ही उत्कण्ठित होकर प्रिया के प्राण धारण के लिए यक्ष संदेश भेजने के लिए आतुर हो जाता है।पर्वत मेघ के आगमन से पुष्पित कदम्बों के रूप में पुलकित को उठता है।भोली ग्राम वधुएँ उसे उत्सुकता से देखती हैं और उसे अपने चंचल पौर वधुएँ उसे अपने चंचल कटाक्षों का विषय बनाती है। वर्षा ऋतु मानस के लिए आँसु बहाते हुए उत्सुक हंस उसके सहयात्री बन जाते हैं और गर्भाधान के लिए उत्सुक बलाका उन आँसुओं का सेवन करती है। कहने का अभिप्राय यह है कि मेघ के उदय होने पर होने वाला कोई ऐसा प्राकृतिक परिवर्तन नहीं है, जिसकी और कवि का ध्यान नहीं गया हो। मेघदूत में प्रकृति वर्णन में ऐसे कई स्थल है, जिन पर उत्कृष्ट कोटि के चित्र बनाए जा सकते हैं।मेघदूत में कालिदास ने प्रकृति का जड़ वस्तु के रूप में चित्रण नहीं किया है, अपितु उसमें मानवीय चेतना एवं क्रियाकलाप का समारोपण किया है। कालिदास के अनुसार पर्वत अपने सखा मेघ से मिलकर हर्ष से गर्म आंसू बहाता है।नदियाँ मानिनी प्रेमिका की भाँति इठला कर अपनी तरंग रूपी भौहें तान लेती है। प्रभात काल में सूर्य अपनी प्रियतमा नलिनी के ओस रूपी आँसू अपने हाथों से पोंछता है। पुराने पत्तों से पीली हुई क्षीण निर्विन्ध्या नदी अपनी विरह दशा से मेघ के सौभाग्य को प्रकट करती है।25 मेघदूत में प्रकृति में सहानुभूति की भावना का भी मनोरम आरोप किया गया है। यक्ष की करूण दशा को देखकर प्रकृति भी उसके प्रति संवेदना प्रकट करती है। जब यक्ष स्वप्न में अपनी प्रियतमा के आलिंगन के लिए शून्य आकाश में भुजाएँ फैलता है, तो वनस्थली देवताओं के नेत्रों से भी मोटे-मोटे आंसू ढलक पडते हैं।

कालिदास का अभिज्ञान शाकुन्तलम भी प्राकृतिक छटाओं से ओतप्रोत है। इस नाटक में प्रकृति अपने स्वरूप में पूर्ण स्वतंत्र होते हुए भी एक सजीव एवं चेतन प्राणी के रूप में चित्रित की गई है। अभिज्ञान शाकुन्तलम् के प्रारम्भिक मंगलाचरण में अपने अभीष्ट देव भगवान शिव की दिव्य अष्टमुर्तियों का साक्षात्कार प्रकृति के ही भीतर करके कवि जनमंगल की कामना करता है। अभिज्ञान शाकुन्तलम का प्रारम्भ ही प्राकृतिक पृष्ठभूमि से होता है। प्रथम अंक की समस्त कथावस्तु कण्व ऋषि के आश्रम में घटित होती है, जो चारों ओर से सघन वनों से आच्छादित है। इसीलिए राजा दुष्यन्त भी आखेट के लिए भटकता हुआ आश्रम में पहुंच जाता है। उसके बाद द्वितीय, तृतीय तथा चतुर्थ अंक की कथावस्तु भी प्रकृति की मनोहर रंगस्थली में

International Journal of Humanities Social Science and Management (IJHSSM)
Volume 5, Issue 3, May-June, 2025, pp: 456-469 ISSN: 3048-6874
www.ijhssm.org

विकसित और पल्लवित होती हैं। कुछ देर के लिए पांचवें अंक में वह राजसदन में अवश्य पहुंच जाती है, पर छठे तथा सातवें अंक में पुनः प्रकृति की गोद में आकर कभी आकाश की ऊँचाइयों में, मेघ मार्गों में और कभी हेमकूट पर्वत पर बने मारीच ऋषि के आश्रम में विहार करने लगती है।उनकी शकुन्तला वस्तुतः प्रकृति कन्या ही है। वह प्रकृति के उन्मुक्त वातावरण में उत्पन्न हुई, प्रकृति ने ही उसका पालन-पोषण और प्रसाधन किया है।इसी प्रकृति कन्या को कवि ने मानवी रूप में चित्रित किया है। इतना ही नहीं कवि की दृष्टि में मानवीय सौंदर्य का मापदण्ड प्रकृति ही है, क्योंकि अनेकत्र कालिदास ने यह माना है कि मानव सौन्दर्य से बढ़कर प्रकृति सौन्दर्य है। मानव सौन्दर्य की अभिवृद्धि प्रकृति के सौन्दर्य से ही होती है। 26 कालिदास की प्रकृति कहीं भी मूक, चेतनाहीन एवं निष्प्राण नहीं है। वह मानव के समान सचेतन और सजीव हैं। सुख-दुःख एवं संवेदना का अनुभव करती है। मानव का उससे अटूट प्रेम है। इसीलिए महर्षि कण्व और शकुन्तला की सखियां ही नहीं, अपितु समस्त तपोवन ही शकुन्तला की विदाई के समय विरह वेदना से पीड़ित हो उठा है।आश्रम से विदा लेते हुये शकुन्तला अनेक करूण भावनाओं से भरी हुई है। परन्तु आश्रम के जन्तुओं, पक्षियों और यहां तक कि पौधों की दशा भी कम शोचनीय नहीं है। हरिणियों ने घास के ग्रास मुंह से गिरा दिये, मयूरों ने नाचना बन्द कर दिया और पौधे मुरझाये पत्तों को गिराने के रूप में आंसू बहा रहे है।27इस प्रकार यह स्पष्ट हो जाता है कि कवि प्रकृति को एक क्षण के लिए भी नहीं त्यागना चाहता है। इसी प्रकृति के वातावरण में पल-पुष्कर युवा प्रेमी-प्रेमिका का सामान्य प्रेम दिव्य भूमि के धरातल पर पहुंचता है। कुमारसम्भव में भीअरुणोदय कालीन बाल सूर्य के समान लाल वस्त्रों को पहिने हई तथा स्तनों के भार से नमित पार्वती, फूलों के गुच्छों से झुकी हुई नूतन ताम्र किसलय दल धारिणी लता के समान चली आ रही थी। मानवीय सौन्दर्य से प्राकृतिक सौन्दर्य की कई स्थानों पर समानता की गई है।28

कालिदास ने अपने खण्डकाव्य मेघदूत में भी प्रकृति को आधार बनाकर मेघ को सन्देशवाहक के रुप में सम्बोधित हुए कहा है कि कृष्ण के समान श्याम रंग वाले तुम जब, दूर होने के कारण चौड़ा होने पर भी जिसका प्रवाह ज्ञात होता है, ऐसी उस नदी पर जल पीने के लिये झुकोगे, तब आकाशचारी देवगण दृष्टि नीचे कर उसे देखेंगे, जैसे मानो पृथ्वी के गले में मोतियों की माला पड़ी हो और उसके मध्य में बड़ा नीलम लगा हो।29 महाकवि कालिदास का नर्मदा वर्णन भी उपमा के सहयोग से अनुपम प्रतीत होता है यथा हे मेघ ! पाषाणों की वजह से विषम विंध्य के निम्न प्रदेश में बिखरी हुई रेवां तुम्हें ऐसी दिखाई देगी, मानो हाथी के शरीर पर बनाई गई सुन्दर रेखा रचना हो।30

कालिदास के प्रकृति वर्णन में उनके द्वारा विरचित अभिज्ञानशाकुन्तलम का अपना विशेष स्थान है। कालिदास प्रकृति की गोद में स्थित भारतीय पावन आश्रमों की सुन्दरता का वर्णन भी करते हैं। इसका सुन्दर चित्र का वर्णन करते हुए कहते हैं कि वृक्षों के खोखलों से तोतों के बच्चों के खाने से गिरे हुये धान नीचे गिरे हुए हैं।31

कालिदास प्रकृति व पर्यावरण के कवि हैं। इनके मेघदूतम् में प्रकृति के विविध रूपों के दर्शन होते हैं। विभिन्न ऋतुओं में पाए जाने वाले पुष्पों का एक जगह वर्णन प्रकृति-चित्रण का अनूठा निदर्शन है। ग्रीष्म और शरद् में कमल, हेमन्त में कुन्द, शिशिर में लोध्र, वसन्त में कुरबक, ग्रीष्म में ही शिरीष तथा वर्षा ऋतु में कदम्ब के पुष्प विकसित होते हैं। कालिदास ने मोहक पर्यावरण और अतिशय अनुराग के कारण समृद्धि की पराकाष्ठा को प्राप्त नगर की स्त्रियों के शृंगार के लिए पुष्पाभूषणों का प्रयोग दिखा कर अपनी पर्यावरण चिन्तन को मूर्त रूप दिया है।32

इस प्रकार पृष्ठभूमि तैयार करते के बाद कालिदास दो-चार छोटे छोटे वाक्यों के द्वारा ही करूण रस को पराकाष्ठा पर पहुंचा देता है। कालिदास प्रकृति के चित्रण में सिद्धहस्त थे। उनके

International Journal of Humanities Social Science and Management (IJHSSM)
Volume 5, Issue 3, May-June, 2025, pp: 456-469 ISSN: 3048-6874
www.ijhssm.org

सजीव एवं विशद प्रकृति वर्णन हमारे कल्पना-चक्षु के सम्मुख एक स्पष्ट चित्र उपस्थित कर देते हैं। ब्राह्य दृश्य के संश्लिष्ट एवं रूपयोजनात्मक चित्रण से उनके प्रकृष्ट प्रकृति प्रेम का परिचय मिलता है। उनके प्रकृति वर्णन में निरीक्षण की नवीनता, सहृदयता की सरसता तथा कल्पना की कमनीयता पाई जाती है।प्रकृति के कोमल और समुज्ज्वल स्वरूप का वर्णन करते समय महाकवि कालिदास ने प्रधानतया प्रकृति के केवल, भव्य, मनोरम और सौन्दर्य-समुज्ज्वल पक्ष का ही वर्णन किया है। प्रकृति के मधुर तथा कोमल पहलू का एक स्निग्ध चित्रण देखिये- हे निर्दोष अङ्गों वाली (सीता); गङ्गा और यमुना के सङ्गम को देखो; यमुना की तरङ्गों से मिलता हुआ गङ्गा का प्रवाह कितना सुन्दर प्रतीत होता है। कही तो ऐसा मालूम पड़ता है कि मोतियों की लड़ी में चमकीले नीलम पिरो दिये गये हों, कहीं ऐसा भान होता है कि श्वेत कमलों की माला में नीलकमल बीच-बीच में गूंधे हों। कहीं नील हंसों की, श्रेणी में आ मिलने वाली मानव-प्रेमी धवल हंसों की पक्ति के समान, कहीं माला गुरू की पथ-रेखाओं से सुशोभित भूतल की चन्दन चर्चित चित्रकारी की भांति, कहीं शरत्-कालीन शुभ मेघ खण्डों के अन्तराल से दीख पड़ने वाले नील नभ प्रदेश के समान और कहीं कहीं काले सपों से अलंकृत तथा भस्माङ्ग-राग से मण्डित भगवान् शङ्कर के शरीर के समान गङ्गा यमुना के यह मनोहर दृश्य सुशोभित हो रहा है। क्या ही अलंकृत, विशद एवं रमणीय वर्णन है।33 महाकवि कालिदास की कृतियां प्रकृति चित्रण की रमणीयता से ओत-प्रोत होने के कारण प्रकृतिप्रेम का विलक्षण नमूना है। जो महाकवियों के काव्यों में दुर्लभ होने के साथ-साथ महाकवि कालिदास के प्रकृतिप्रेम का निर्देशक तत्व है। ज्ञातव्य है कि जो व्यवस्था और श्रंखला बलपूर्वक थोपी नहीं जाती, वही मनुष्य को नियन्त्रित करती हुई मुक्ति देती है। ऐसी व्यवस्था और निर्विरोध श्रंखला प्रकृति में ही देखी जा सकती है। प्रकृति की अनिर्वचनीय सुषमा से आकर्षित महाकवि कालिदास ने एक ओर प्रकृति के बाह्य सौन्दर्य में अवगाहन करके, उसके प्रति अपने हृदय के उल्लास को व्यक्त किया है तो दूसरी और प्रकृति के नानाविध क्रिया-कलापों में अपनी अन्त:प्रकृति की प्रतिच्छाया का अनुभव करते हुए ज्वलन्त रूपकों को अपने काव्यों में चित्रित किया है। उन्होंने प्रकृति में सर्वदा जागरूक रहने वाली व्यवस्था का तथा सन्तुलन एवं कालुष्य-विभंजिका शक्ति का अनुशीलन करके,प्रकृति के जड़ एवं चेतन दोनों रूपों में नितान्त उदात्त एवं महनीय तथ्यों का साक्षात्कार किया है। दिवस और रात्रि के नियमित आवर्तन एक के उपरान्त दूसरी ऋतु के अवतरण, नित्य नवीन शोभा से उद्भारित धरती और आकाश, उदय एवं अस्त तथा ह्रास एवं वृद्धि के क्रमिक चक्र में चक्रमणशील सूर्यचन्द्रादि में महाकवि कालिदास ने उस अनोखी निर्विरोध श्रंखलाबद्ध व्यवस्था का दर्शन किया है. जो मनुष्य को मुक्तिमार्ग प्रदान कर सकती है। प्रकृति अपने स्थिर नियमों से मानव के सम्मुख अनेक आदर्श प्रस्तुत करती है. उदाहरणतया परोपकार की दृष्टि से कालिदास की मान्यता है कि परोपकारी की परोपकार करते समय किसी प्रकार का गर्व नहीं करना चाहिए, अन्यथा परोपकार करने के बाद, उसका बखान करने से उसकी महता कम हो जाती है। इस निष्कर्ष पर पहुंचते हुए महाकवि ने वृक्षों का अवलोकन किया है. जो स्वयं अपने सिर पर धूप झेलकर शरण में आए हुए प्राणियों को अपनी छाया द्वारा सन्तापमुक्त किया करते हैं। महाकवि कालिदास में प्रकृति के प्रति व्यापक सहानुभूति है। इस सहानुभूति का ही परिणाम है कि महाकवि ने अपनी कृतियों में प्रकृति को भी अन्य मानव पात्रों की भाँति नवीन प्राणवान स्वरूप प्रदान किया है।

इस प्रकार से यह कहा जा सकता है कि भारतीय चिन्तन में मानव प्रकृति-जगत में जन्म लेता है, उसका जीवन प्रकृति जीवन का ही अंग है। उसकी सौन्दर्य परिकल्पना प्रकृति से उद्भूत है। दोनों का परिचालन एक ही प्रकार के नियमों से

International Journal of Humanities Social Science and Management (IJHSSM)
Volume 5, Issue 3, May-June, 2025, pp: 456-469 ISSN: 3048-6874
www.ijhssm.org

होता है। इसी कारण भारतीय कवि मानव और प्रकृति के आन्तरिक और घनिष्ठ सम्बन्ध को कभी नहीं भूलता ह। वह अपने बिम्ब-विधान में इस आन्तरिकता को मानव और प्रकृति दोनों के वर्णन में सुरक्षित रखता है। वाल्मीकि रामायण में इस प्रकार के सजग प्रयोग मिलने आरम्भ हो जाते हैं। अश्वघोष, कालिदास तथा बुद्धघोष में ये कलात्मक उत्कर्ष की स्थिति को प्राप्त कर लेते हैं। कवि मानवीय अंग-प्रत्यंग, परिस्थितियों, भावों के सौन्दर्य-विधान के लिए प्रकृति के उपकरणों से बिम्ब योजना करता है। इसी प्रकार प्रकृति में जीवन की व्यञ्जना के लिए मानवीय प्रतीकों तथा उपमानों की योजना की गई है। उसकी दृष्टि में मूलतः मानवीय तथा प्राकृतिक संसारों में समान जीवनी शक्ति प्रवाहित हो रही है। उसने अपनी सौन्दर्य दृष्टि में अंश के स्थान पर सम्पूर्ण को ग्रहण करने का प्रयत्न किया है। उसने साहचर्य और तादात्म्य की भावना को पशु, पक्षी, लता, पादपों में परिव्याप्त देखा है। संस्कृत काव्यों में मानवीय भावना और प्रकृति के बीच व्यापक सहानुभूति है। भारतीय चिन्तन में यह भावना इतने सूक्ष्म स्तर पर परिव्याप्त है कि हमारे लोक गीतों में भी प्रकृति मानव सहचरी के रूप में प्रस्तुत हुई है। यह सहचरण और साहचर्य का भाव कई स्तरों पर व्यञ्जित हुआ है। कालिदास की सौन्दर्य परिकल्पना की सर्वाधिक तथा सर्वोच्च अभिव्यक्ति प्रकृति और मानव जीवन के अद्भुत सामञ्जस्य में देखी जा सकती है। प्रकृति और मानव जीवन को एक ही स्तर पर एक भावना से अनुप्राणित और सहज साहचर्य से सम्पृक्त चित्रित करने में कालिदास के समकक्ष कोई दूसरा कवि नहीं है और ऐसा कवि भारत में ही हो सकता था।कालिदास मानव सौन्दर्य को प्रकृति सौन्दर्य के साथ एक रस ही देखते हैं। उनके प्रत्येक काव्य और नाटक में मानव और प्रकृति की सौन्दर्य परिकल्पना अभिन्न रूप में ही प्रतिघटित हुई है। वास्तव में महाकवि कालिदास के बारे में उचित ही कहा गया है कि मञ्जरियों के समान मिठासभरी एवं घनी कालिदास की मीठी और सारगर्भित सूक्तियों के भावार्थ को समझने पर किसे आनन्द नहीं आता । महाकवि कालिदास मुख्यतः प्रकृति प्रेम के प्रमुख कवि माने जाते हैं क्योंकि कालिदास प्रकृति की गोद में ही पले बढे है।। इसी कारण जब हम उनकी कृतियों को देखते हैं तो पाते हैं कि उनके कृतियों के पात्र भी प्रकृति में ही अपना जीवन जीते हैं। यह सर्वथा स्वाभाविक और सत्य है कि मानव जीवन और प्रकृति का मनुष्य के जन्म से ही एक अटूट सम्बन्ध होता है। प्रकृति के बिना मानव जीवन मृत है। कालिदास भी प्रकृति से जुड़े ही मनुष्य थे। इसी कारण उनकी कृतियों में भी हमें प्रकृति चित्रण देखने को मिलता है। संभवतः कालिदास की प्रथम रचना कृति ऋतुसंहार को माना जाता है। कभी वे नवयुग में प्रकृति का चित्रण करते हैं तो कभी सौन्दर्य रूप पर हाव-भाव में प्रकृति को चित्रित करते हैं। उन्होंने मेघदूत में प्रकृति और मानव जीवन में एकता स्थापित करने का प्रयास किया गया है। कुमारसम्भवम्् में उन्होंने हिमालय की अभूतपूर्व सुन्दरता का चित्रण करते हुए शिव और पार्वती का प्राकृतिक वर्णन किया है। रघुवंशम में महाकवि ने मानव जीवन और प्रकृति को एक सूत्र में भी पिरोया है और अभिज्ञान शाकुन्तलम में उन्होंने मानव जीवन और प्रकृति के मधुर सम्बन्धों को समाज के सामने चित्रित करने का प्रयास किया है।

सन्दर्भ सूची-

1-बाणीं काणभुजीमजीगणदयाशासौच्च वैयासीकीम् ।
अन्स्तन्नपरैस्त पद्मगमवीगुम्फेषु छाजागरीन् ।।
वांचामाक्लयद्रहस्यमखिलं यश्चाक्षपादस्फुराम् ।
लोके भूयदुपज्ञमेव विदुषां सौजन्यजन्यं यशः ।।
मल्लिनाथ सूरि।
2-कालिदासगिरा सारं कालिदासः सरस्वती ।
चतुर्मुखोऽथवा ब्रह्मा विदुर्नान्ये तु मादृशः।।
मल्लिनाथ सूरि।
3-वासन्तं कुसुमं फलं च युगपत् ग्रीष्मस्य सर्वं च

International Journal of Humanities Social Science and Management (IJHSSM)
Volume 5, Issue 3, May-June, 2025, pp: 456-469 ISSN: 3048-6874
www.ijhssm.org

यत् यच्चान्यन्मनसो रसायनमत सन्तर्पणं मोहनम्।
एकीभूतमभूतपूर्वमथवा स्वर्लोकभूलोकयो।
रैश्वर्यं यदि वाञ्छसि प्रियसखे! शाकुन्तल सेव्यताम्।
श्री वासुदेव विष्णु मिरानी कृत संस्कृत अनुवाद।
4-सरसिजमनुविध्दं शैवलेनापि रम्यं।
मलिनमपि हिमांशोर्लक्ष्म लक्ष्मीं तनोति ।
इयमधिकमनोज्ञा वल्कलेनापि तन्वी।
किमिव हि मधुराणां मण्डनं नाकृतीनाम् ॥

अभिज्ञान शाकुन्तलम 1/20
5-मृगाः प्रचण्डातपतापिता भृशं तृषा महत्ता परिशुष्कतालव: ।
वनान्तरे तोयमिति प्रधाविता निरीक्षण भिन्नांजनसन्निभं नभ: ।।
प्रावट् प्रभाव- वहन्ति वर्षन्ति नदन्ती भान्ति ध्यायन्ति नृत्यन्ति समाश्रयन्ति ।। ऋतु संहार.1/1
6-या सृष्टिः स्रष्टुराद्या वहति विधिहुतं या हविर्या च होत्री।
ये द्वे कालं विधत्तः श्रूतिविषयगुणा या स्थिता व्याप्य विश्वम् ।।
यामाहुः सर्वबीजप्रकृतिरिति यया प्राणिनः प्राणवन्तः।
प्रत्यक्षाभिः प्रपन्नस्तनुभिरवतु वस्ताभिरष्टाभिरीशः ॥

अभिज्ञान शाकुन्तलम-1/1
7-हविरावर्जितं होतस्त्वया विधिवदग्निषु ।
वृष्टिर्भवति सस्यिनामवग्रहविशोषीणाम् ।।रघुवंश, 1/62
8-भवतु तव विडौजाः प्राज्यवृष्टिः प्रजासु ।
त्वमपि वितनयज्ञो वज्रिणं प्रीणयस्व ।
नियतमुभयलोकानुग्रहश्लाघनीयैः
।।अभिज्ञानशाकुन्तल-7/34
9-पातुं न प्रथमं व्यवस्यति जलं युष्मास्वपीतेषु या।
नादत्ते प्रिय मण्डनापि भवतां स्नेहेन या पल्लवम् ।।
आद्ये वः कुसुमुप्रसूतिसमये यस्या भवत्युत्सवः।
सेयं याति शकुन्तला पति-गृहं सर्वे रनुज्ञायताम् ।।
अभिज्ञान शाकुन्तलम-4/9
10-यस्या त्वया व्रणविरोपणमिङ्गुदीनां ।
तैलं न्यषिच्यत मुखे कुशसूचिविद्धे।
श्यामाकमुष्टिपरिवर्धितको जहाति।
सोऽयं न पुत्रकृतकरूपरवीन मृगस्ते।।

अभिज्ञानशाकुन्तल 4/14
11-क्षौमं केनचिदिन्दुपाण्डु तरुणा माङ्गल्यमाविष्कृतं।
निष्ठ्यूतश्चरणोपरागसुभगो लाक्षारसः केनचित् ।।
अन्येभ्यो वनदेवताकरतलैरापर्वभागोत्थितैर्।
दत्तान्याभरणानि नः किसलयोद्धेदप्रतिद्वद्धिभिः।।
अभिज्ञान शाकुन्तलम-4/5
12-नीपं दृष्ट्वा हरितकपिशं केसरैरर्द्धरूढै।
राविर्भूतप्रथममुकुला: कन्दलीश्चानकच्छम्।।
जग्ध्वारण्येष्वधिकसुरभिं गन्धमाध्राय चोर्व्या:।
सारङ्गास्ते जललवमुच: सूचयिष्यंति मार्गम्॥ मेघदूत-1/22
13-फुट नोट मेघालोके भवति सुखिनोस्प्पन्यथावृत्ति चेत:।
कण्ठाश्लेषप्रणयिनि जने किं पुनर्दूरसंस्थे॥ मेघदूत 1/3
14-वीचिक्षोभस्तनितविहगश्रेणि काञ्चीगुणाया:।
संसर्पत्या: स्खलितसुभगं दर्शितावर्तनाभे:।।
निर्विन्ध्याया:पथि भव रसाभ्यंतर: संनिपत्य।
स्त्रीणामाद्यं प्रणयवचनं विभ्रमो हि प्रियेषु॥ मेघदूत-1/29
15-प्रसादसुमुखे तस्मिंश्चन्द्रे च विशदप्रभे।
तदा चक्षुष्मतां प्रीतिरासीत्समरसा द्वयो:॥ रघुवंश-4/18
16-आवर्जिता किञ्चिदिव स्तनाभ्यां वासो वसाना तरुणार्करागम्।

International Journal of Humanities Social Science and Management (IJHSSM)
Volume 5, Issue 3, May-June, 2025, pp: 456-469 ISSN: 3048-6874
www.ijhssm.org

पर्याप्तपुष्पस्तबकावनम्रा सञ्चारिणी पल्लविनी लतेव।कुमारसम्भव-3/54

17-नि:शब्दोस्पि प्रदिशसि जलं याचितश्चातकेभ्य:।

प्रत्युक्त हि प्रणयिषु सतामीप्सितार्थक्रियैव। कुमारसम्भव-2/57

18-चानुनीत: प्रणतेन पश्चान्मया महर्षिर्मुदतामगच्छत्।

उष्णत्वमग्न्यातपसम्प्रयोगाच्छैत्यं हि यत् सा प्रकृतिर्जलस्य।।

रघुवंश5/34

19-पश्य पश्चिमदिगंतलम्बिना निर्मित मितकथे विवस्वता।

दीर्घया प्रतिमया सरोम्भयां तापनीयमिव सेतुबन्धनम्।।कुमारसम्भव 8/34

20-शक्यमोषधिपतेर्नवोदया: कर्णपूरचनाकृते तव।

अप्रगल्भयवसूचिकोमलाश्छेत्तुमग्रनखसम्पुटै: करा।।कुमारसम्भव-8/62

21-शक्यमङ्गुलिभिरुत्थितैरध: शाखिना पतितपुष्पपेशलै:।

पत्रजर्जरशशिप्रभालवैरेभिरुत्कचयितुं तवालकान।।कुमारसम्भव-8/72

22-अङ्गुलीभिरिव केशसञ्चयं सन्निगृह्य तिमिरं मरीचिभि:।

कुडमलीकृतसरोजलोचन चुम्बतीव रजनीमुखं शशी॥ कुमारसम्भव-8/63

23-घोरान्धकारनिकरप्रतिमो युगांत-कालानलप्रबलधूमनिभो नभोसन्ते।

गर्जारवैर्विघटयन्नवनीधराणांशृङ्गाणि मेघनिवहो घनमुज्जगाम।।।कुमारसम्भव-17/41

24-संचारपूतानि दिगन्तराणि कृत्वा दिनान्ते नीलयाय गन्तुम् ।

प्रचक्रमे पल्लवरागताम्रा, प्रभा पतङ्गस्य मुन्नेश्च धेनु:।।कुमारसम्भवम्-2/15

25-आपृच्छस्व प्रियसखममुं तुङ्गमालिङ्ग्य।

शैलं वन्द्यै: पुंसां रघुपतिपदैरङ्कितं मेखलासु।

काले काले भवति भवतो यस्य संयोगमेत्य य संयोगमेत्य।

स्नेहव्यक्तिश्चिरविरहजं मुञ्चतो बाष्पमुष्णम् ।। पूर्वमेघ-12

26-अधरः किसलयरागः कोमलविटपानुकारिणौ बाहू ।

कुसुममिव लोभनीयं यौवनमङ्गेषु सन्नध्दम् ॥

अभिज्ञान शाकुन्तलम 1/21

27-उद्गलितदर्भकवला मृग्यः परित्यक्तनर्तना मयूराः ।

अपसृतपाण्डुपत्राः मुञ्चन्त्यश्रूणीव लताः।।

अभिज्ञान शाकुन्तलम 4/12

28-आवर्जिता किंचिदिवस्तनाभ्यां वासो वसाना तरुणार्करागम्।

पर्याप्तपुष्पस्तबकावनम्रा संचारिणी पल्लविनी लतेव ।।कुमारसम्भव-4/21

29-त्वय्यादातुं जलमवनते शाङ्गिणो वर्णचौरे।

तस्याः सिन्धोः पृथुमपि तनुं दूरभावात्प्रवाहम् ।

प्रेक्षिष्यन्ते गगनगतयो नूनमावर्ज्य दृष्टी।

रेकं मुक्तागुणमिव भुवः स्थूलमध्येन्द्रनीलम् ।। पूर्वमेघ-46

30-रेवां दृक्ष्यस्युपलविषमे विन्ध्यपादे विषीर्णां ।

भक्तिच्छेदैरिव विरचितां भूतिभंगे गजस्य ।।पूर्वमेघ-41

31-नीवाराः शुकगर्भकोटरमुखभ्रष्टास्तरूणामधः।

प्रस्निग्धाः क्वचिंदगिदीफलभिदः सूच्यन्त एवोपलाः।।

विश्वासोपगमादभिन्नगतयः शब्दं सहन्ते मृगा।

स्तोयाधारपथाश्च वल्कलशिखानिष्यन्दरेखांकिताः ।।

अभिज्ञानशाकुन्तलम् 1/13

32- हस्ते लीलाकमलमलके बालकुन्दानुबिद्धं

नीतालोध्र प्रसवरजसा पाण्डुतामानने श्रीः।

चूडापाशे नवकुरबकं चारू कर्णे शिरीषं

International Journal of Humanities Social Science and Management (IJHSSM)
Volume 5, Issue 3, May-June, 2025, pp: 456-469 ISSN: 3048-6874
www.ijhssm.org

सीमन्ते च त्वदुपगमजं यत्र नीपंवधूनाम्।। उत्तर मेघ-2

33-क्वचित्प्रभालेपिभरिन्द्रनीलैर्मुक्तामयी यश्टिरिवानुविद्धा।

अन्यत्र माला सितपङ्कजानामिन्दीवरैरूत्खचितान्तरेव ।।

क्वचित्खगानां प्रियमानसानां कादम्बसंसर्गवतीव पङ्क्तिः।

अन्यत्र कालागुरूदत्तपत्रा भक्तिर्मुवश्चन्दनकल्पितेव ।।

क्वचित्प्रभा चान्द्रमसी तमोभिश्छायाविलीनैः शबलीकृतेव।

अन्यत्र शुभ्रा शरदभ्रलेखा रन्ध्रेष्विवालक्ष्यनभः प्रदेशा॥

क्वाच्चि कृष्णोरगभूषणेव भस्माङ्गराया तनुरीश्वरश्य।

पश्यानवद्याङ्गि विभाति गङ्गा भिन्नप्रवाहा यमुनातरङ्गैः ।। रघुवंश-13/54-57

34-निर्गतासु न वा कस्य कालिदासस्य सूक्तिषु।
प्रीतिर्मधुरसान्द्रासु मञ्जरीष्विव जायते ॥